

9

एकध्रुवीय अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था का बहुध्रुवीय व्यवस्था में परिवर्तन: ट्रंप प्रशासन के विशेष संदर्भ में

श्रीमती अनीता मीना*

सह आचार्य — राजनीति विज्ञान, राजकीय महाविद्यालय, जयसिंहपुरा खोर, जयपुर, राजस्थान।

*Corresponding Author: anitameena94601@gmail.com

सार

द्वितीय विश्वयुद्ध काल में ही अमेरिका का विश्व राजनीति में अकस्मात प्रवेश हुआ और 1945 में जापान के हिरोशिमा एवं नागासाकी (6,9 अगस्त 1945) शहरों में परमाणु बम के प्रथम प्रयोग के बाद तो अंतरराष्ट्रीय रंगमंच पर उसका एक महाबली के रूप में क्रांतिकारी अवतरण हुआ। 1990 तक एक ऐसा दौर अंतर्राष्ट्रीय रणमंच पर देखा गया, जब पूरी दुनिया सोवियत संघ एवं अमेरिका नामक दो महाबलियों के गुटों में विभक्त हो गई थी। जिसे शीतयुद्ध काल अथवा द्विध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था कहा जाता है। किन्तु जैसे ही 1991 में सोवियत संघ 15 देशों में विभक्त हुआ और उसकी अंतर्राष्ट्रीय शक्ति और प्रभाव में कमी होने लगी तो धीरे धीरे द्विध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था एकध्रुवीय अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में बदलने लगी और अब अमेरिका को विश्व की एकल महाशक्ति कहा जाने लगा। वैश्विक राजनीतिक रंगमंच पर अब वह अपनी नीतियों से संपूर्ण विश्व को हांकने लगा और यदि कोई देश उसके फरमानों को नहीं मानता तो अमेरिका द्वारा उसको सबक सिखाया जाने लगा। (जैसे इराक, अफगानिस्तान कोरिया और वियतनाम समस्याएं) किंतु विगत दशक और विशेषकर ट्रंप प्रशासन के द्वितीय काल (जनवरी, 2025 से) में ऐसा प्रतीत होने लगा है कि अब दुनिया अमेरिका के शिकंजे से जैसे मुक्त होने को छटपटा रही है। अमेरिका— ईरान युद्ध एवं ग्रीनलैंड पर अमेरिका द्वारा कब्जे के प्रयास और योरोपीय संघ द्वारा विरोध करने पर विफलता प्राप्त होने के बाद तो यह प्रश्न कौंधने लगा है कि विश्व कहीं बहुध्रुवीय दुनिया की ओर तो नहीं बढ़ रहा है, जहां अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को प्रभावित करने वाले सत्ता के एक या दो नहीं वरन् अनेक केंद्र होंगे। प्रस्तुत शोध पत्र इसी विषय पर विस्तार से मंथन करने का प्रयास है।

शब्दकोश

एकध्रुवीय अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था, द्विध्रुवीय अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था, बहुध्रुवीय अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था, ट्रंप प्रशासन, अमेरिका प्रथम नीति, वैश्विक शक्ति संतुलन, टैरिफ वार।

प्रस्तावना

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का वर्तमान दौर एक संक्रमणकालीन दौर से गुज़र रहा है। विशेषकर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप जब से जनवरी 2025 में पुनः राष्ट्रपति बने हैं, तब से ऐसा लगता है, जैसे वह पूरी दुनिया को "अमेरिका प्रथम नीति" का हिस्सा बनाना चाह रहे हैं। आसान शब्दों में कहे तो जैसे पूरे विश्व को अमेरिकी बाजार बनाने हेतु आतुर हैं। यही कारण है कि विश्व के सभी हिस्सों में उनके

खिलाफ़ आवाज़ उठने लगी हैं। अमेरिका को लोकतांत्रिक शासन व्यवस्थाओं का आदर्श माना जाता है। किंतु वर्तमान स्थितियों में भी क्या यह कहना सत्य होगा ? निश्चित रूप से जवाब ना में होगा। यद्यपि आज भी अमेरिका दुनिया का सबसे शक्तिशाली देश हैं, जिसके एक निर्णय से पूरा विश्व हिल जाता हैं किंतु आज अमेरिका और अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अपनी नीतियों के कारण अनेक प्रकार के विवादों से घिरे हैं और अंतर्राष्ट्रीय शांति के लिए खतरा बने हुए हैं। यही कारण हैं कि अमेरिका से मुकाबला करने हेतु विश्व में नवीन शक्ति केंद्र बनने लगे हैं। रूस अपनी कमज़ोर स्थिति से बहुत आगे निकल चुका हैं और चीन अमेरिका के समकक्ष आ खड़ा हुआ हैं और भारत, ब्राज़ील आदि देश अब क्षेत्रीय शक्तियां मात्र नहीं हैं। अर्थात् विश्व अब एकध्रुवीयता से निकलकर बहुध्रुवीयता की ओर बढ़ रहा हैं और प्रस्तुत शोध पत्र इस विषय को लेकर विश्लेषण करने का एक छोटा सा प्रयास हैं।

शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य एवं महत्व

1. द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् स्थापित शीतयुद्धकालीन अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था और अमेरिका द्वारा अलगाववाद को परित्याग करने की वैश्विक स्थितियों को स्पष्ट करना।
2. शीतयुद्ध की समाप्ति पश्चात् स्थापित अमेरिकी एकध्रुवीय अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के उदय का विश्लेषण करना।
3. बदलते वैश्विक परिदृश्य में ट्रंप के द्वितीय कार्यकालीन विदेश नीति, टैरिफ नीति एवं उसके परिणामस्वरूप वैश्विक शक्ति संतुलन की विवेचना करना।
4. रूस— यूक्रेन युद्ध, ईरान— अमेरिका युद्ध, ग्रीनलैंड विवाद आदि वर्तमान महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में बहुध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था के अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच पर आगमन की आहट का विश्लेषण करना।
5. चीन, रूस, भारत, ब्राज़ील एवं यूरोपीय संघ जैसी वर्तमान वैश्विक शक्ति केंद्रों की बहुध्रुवीय विश्व में भूमिका का विश्लेषण करना।
6. नाटो, ब्रिक्स, यूरोपियन संघ आदि के समक्ष वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में उपस्थित चुनौतियों एवं राष्ट्रों के मध्य बदलने वैश्विक शक्ति संतुलन एवं उसके प्रभावों की विवेचना करना।
7. बदलती बहुध्रुवीय अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में भारत की भूमिका एवं विदेश नीति की संभावनाओं पर विचार करना।
8. चीन — अमेरिका संबंधों की दृष्टि से बदलते अंतर्राष्ट्रीय समीकरणों की विवेचना करना।
9. अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच पर महाशक्ति के रूप में रूस के वैश्विक परिदृश्य में पुनः उत्थान एवं बहुध्रुवीय व्यवस्था पर प्रभाव की विवेचना करना।
10. यह मूल्यांकन करना कि ट्रंप प्रशासन की नीतियां बहुध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था के निर्माण में किस सीमा तक जिम्मेदार रही हैं।

महाशक्तियों के मध्य शीतयुद्ध और द्विध्रुवीय विश्व व्यवस्था का उदय

द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के साथ ही अब विश्व की बागडोर यूरोप के प्रमुख दो देशों इंग्लैंड और फ्रांस से निकलकर अमेरिका और सोवियत संघ के हाथ में आ गई। भले ही युद्ध के दौरान अमेरिका और सोवियत ने मित्र राष्ट्रों (इंग्लैंड, फ्रांस आदि) के पक्ष और धुरी राष्ट्रों (जर्मनी, इटली, जापान) के विरुद्ध सहयोग किया था, किंतु युद्ध समाप्ति के साथ ही अनेक प्रकार के वैचारिक, राजनीतिक और सामरिक मतभेद उभरने लगे और युद्धकालीन मित्रता शीघ्र ही शत्रुता में बदलने लगी। यहाँ तक कि न

सिर्फ ये दोनों देश वरन् सम्पूर्ण विश्व दो भागों में विभक्त होने लगा और इस विभाजन का मुख्य आधार परस्पर विरोधी विचारधाराएं (पूँजीवाद एवं साम्यवाद) थी। पूँजीवादी विश्व का नेतृत्व अमेरिका ने किया और साम्यवादी देशों का नेतृत्व सोवियत संघ ने किया। इन्हीं वैचारिक मतभेदों ने शीतयुद्ध को जन्म दिया और अंतर्राष्ट्रीय राजनीति द्विध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था में बदलने लगी।

शीतयुद्ध उस व्यवस्था को संबोधित किया जाने लगा, जिसमें सोवियत संघ एवं अमेरिका के मध्य उत्पन्न राजनीतिक, वैचारिक, आर्थिक एवं सैन्य प्रतिस्पर्धा चरम पर पहुंचने लगी थी। किंतु दोनों ही महाशक्तियां प्रत्यक्ष युद्ध से बचते हुए एक दूसरे के प्रभाव को सीमित करने हेतु प्रयासरत रहती थी। यही कारण था कि दोनों महाशक्तियां अपने अपने प्रभाव क्षेत्र में वृद्धि हेतु यत्न करती रही। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सैन्य गुटों (पूँजीवादी एवं साम्यवादी) का निर्माण किया जाने लगा। जिनमें प्रमुख नाटो (1949) और वारसा (1955) पैक्ट थे।

एकध्रुवीय अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था का उदय एवं कारण

1991 में सोवियत संघ के 15 स्वतंत्र देशों में विभक्त होने के बाद शीतयुद्ध का दौर समाप्त हो गया किंतु अब विश्व दो महाबलियों के स्थान पर एक महाशक्ति अर्थात् अमेरिका के प्रभाव क्षेत्र की गिरफ्त में आने लगा। चूंकि सोवियत संघ अब शक्तिशाली राष्ट्र अथवा राष्ट्रों का संघ नहीं रहा वरन् अनेक आर्थिक, सामरिक और राजनीतिक समस्याओं से जूझने लगा था और विश्व के अन्य देश इतने ताकतवर नहीं थे कि अमरीका का मुकाबला कर सकें। इसी स्थिति को एकध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था कहा जाने लगा। एकध्रुवीय व्यवस्था के प्रमुख कारण निम्नानुसार हैं –

1. **सोवियत संघ का विघटन** – द्वितीय विश्वयुद्धोत्तर काल में अमेरिका अंतर्राष्ट्रीय मामलों में अलगाववादी नीति को छोड़कर अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में न सिर्फ शामिल हो गया वरन् पूँजीवादी विश्व का नेतृत्व भी करने लगा। पूँजीवादी नेतृत्व को स्थापित करने हेतु नाटो, सीटो, सेंटो जैसे संगठनों की स्थापना की और अमेरिकी प्रभुत्व के तले विभिन्न पूँजीवादी देश इन संगठनों की सदस्यता लेने लगे। दूसरी तरफ साम्यवादी विश्व का नेतृत्व साम्यवादी सोवियत संघ करने लगा और उसने भी “वारसा पैक्ट” जैसे संगठन बनाए। इस प्रकार विश्व दो भागों में बंट गया और दोनों में प्रतिद्वंद्विता और संघर्ष जारी रहा। किंतु 1991 में सोवियत संघ के विघटन से विश्व राजनीति में यह शक्ति-संतुलन लुप्त हो गया क्योंकि सोवियत संघ का प्रमुख देश रूस उस वक्त उतना शक्तिसंपन्न नहीं हो पाया था कि सोवियत संघ जैसी महाशक्ति का उत्तरदायित्व निर्वहन कर सके और यही कारण था कि अब अमेरिका का प्रभुत्व बढ़ने लगा और विश्व एकध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था में परिवर्तित होने लगा।
2. **सैन्य महाशक्ति के रूप में अमरीका का वैश्विक विस्तार** – सोवियत संघ के विघटन एवं शीतयुद्ध की समाप्ति के पश्चात् अमरीका अपनी सामरिक ताकत के दम पर विश्व के विभिन्न क्षेत्रों पर अपनी एकछत्र उपस्थिति दर्शाने लगा और उसका मुकाबला करने वाली कोई अन्य महाशक्ति नहीं थी। चीन, जापान, ब्राजील और भारत जैसी क्षेत्रीय महाशक्तियां मूकदर्शक बनने को मजबूर थी। रूस और चीन उतने ताकतवर नहीं थे कि अमेरिका के महाबली अवतार का मुकाबला कर सकें।
3. **अमरीका का आर्थिक प्रभुत्व** – अमेरिकी का विकसित औद्योगिक ढांचा, विशाल अर्थव्यवस्था और बहुसंख्यक विकासशील देशों को दी जा रही वित्तीय सहायता और वैश्विक व्यापार में अमरीकी

डॉलर का प्रभुत्व आदि कारणों ने अमेरिका का विश्व में आर्थिक प्रभुत्व स्थापित कर दिया। आज का युग डॉलर और व्यापार का युग है, जिसमें सोवियत संघ के पतन के पश्चात् अमेरिका का ही पूर्ण वर्चस्व स्थापित हो गया।

4. **पूंजीवाद का बढ़ता महत्व** – सोवियत संघ के विघटन के बाद साम्यवादी विचारधारा की लोकप्रियता का धीरे धीरे प्रभाव कम होने लगा और साम्यवादी देशों में भी पूंजीवादी विचारधारा का प्रवेश होने लगा। इस प्रकार उदारीकरण, वैश्वीकरण एवं निजीकरण की नीतियों से प्रभावित अमेरिकी आर्थिक मॉडल का अंतर्राष्ट्रीय महत्व बढ़ने लगा। अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनियां दुनिया के देशों में न सिर्फ व्यापार और निवेश करने लगी वरन् अप्रत्यक्ष रूप से अमेरिकी प्रभुत्व भी बढ़ने लगा।
5. **विज्ञान एवं तकनीकी दृष्टि से श्रेष्ठता** – अंतरिक्ष अनुसंधान, संचार, कंप्यूटर, सैन्य तकनीक और इंटरनेट की दुनिया में अमेरिका का योगदान अप्रतिम रहा है। अप्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष रूप से इस क्षेत्र में अमेरिका के वर्चस्व ने भी एकध्रुवीय विश्व व्यवस्था के निर्माण में सहयोग दिया।
6. **उदारीकरण एवं वैश्वीकरण के दौर का प्रभाव** – 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद अमेरिकी नीतियों से प्रभावित उदारीकरण, मुक्त व्यापार, विदेशी निवेश एवं वैश्वीकरण की नीतियों का विस्तार हुआ और इस प्रकार अमेरिकी नीतियों का प्रभाव दुनिया के देशों में तीव्रता से बढ़ने लगा। यही कारण था कि दुनिया अमेरिका केंद्रित विश्व व्यवस्था में बदलने लगी और एकध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था अस्तित्व में आने लगी।

एकध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था का बहुध्रुवीय अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में परिवर्तन से अभिप्राय एवं कारणों का विवेचन

बहुध्रुवीय अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था से अभिप्राय ऐसी विश्व व्यवस्था से है, जिसमें शक्ति संतुलन किसी एक या दो महाशक्तियों के हाथों में न होकर अनेक वैश्विक शक्ति – केंद्रों में निहित होता है। इन शक्ति केंद्रों का रूप आर्थिक, सामरिक, तकनीकी और कूटनीतिक अनेक दृष्टि से अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच पर देखा जा सकता है। शीतयुद्ध काल में विश्व के दो शक्ति केंद्र थे। सोवियत संघ के पतन के पश्चात् द्विध्रुवीय अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था अमेरिका केंद्रित एकध्रुवीय व्यवस्था के रूप में परिवर्तित होने लगी और अब दुनिया के अनेक शक्ति केंद्र स्थापित होने लगे हैं। यही कारण है कि एकध्रुवीय अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था अब बहुध्रुवीय अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में परिवर्तित होने की ओर अग्रसर है, जिसके निम्नलिखित कारण स्पष्ट किये जा सकते हैं –

1. **अमेरिकी प्रभुत्व में कमी:** यद्यपि अमेरिका की आर्थिक एवं सैन्य शक्ति का आज भी प्रभुत्व है, लेकिन उसे अनेक अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर अन्य शक्तियों के विरोध और प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। पूर्व में उसके आदेशों का एकतरफा प्रभाव था, किंतु आज दुनिया के अनेक देश राजनीतिक, व्यापारिक एवं सैन्य दृष्टि से अमेरिका के वर्चस्व को चुनौती देने लगे हैं। ग्रीनलैंड के प्रकरण में इन देशों ने एकजुट होकर अमेरिका की सैन्य कार्यवाही का विरोध किया और अमेरिका को पीछे हटना पड़ा था।
2. **चीन का वैश्विक शक्ति के रूप में उदय:** तीव्र आर्थिक विकास, सैन्य आधुनिकीकरण और तकनीकी प्रगति ने चीन को विश्व राजनीति के प्रमुख शक्ति-केंद्र के रूप में स्थापित कर दिया है। आज चीन इतनी सामर्थ्य रखता है कि अपने दम पर अमेरिका को चुनौती दे सकता है। न

सिर्फ सामरिक दृष्टि से वरन व्यापारिक और तकनीकी दृष्टि से भी अमेरिका से आगे निकलने की होड़ करने हेतु तत्पर हैं।

3. **भारत का बढ़ता अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव:** भारत की आज़ादी के 79 वर्ष हो चुके हैं। पिछली सदी भारत के दुनिया में अपने अस्तित्व को बनाने और बचाने की थी किंतु अब 21वीं सदी में भारत दुनिया में अपना स्थान बना चुका है। अब वह क्षेत्रीय महाशक्ति ही नहीं वरन् वैश्विक शक्ति बनने की ओर अग्रसर है। उसकी विशाल युवा शक्ति देश को तकनीकी, वैज्ञानिक, व्यापारिक और सामरिक दृष्टि से प्रगति पथ पर ले जा रही है।
4. **रूस का पुनरुत्थान:** सोवियत संघ के विघटन के बाद यह देश 15 विभिन्न देशों में विभक्त हो गया था और उसका मुख्य घटक देश रूस भी अपने अस्तित्व की रक्षा हेतु अनेक राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक समस्याओं से जूझ रहा था। किंतु 21वीं सदी तक आते आते ऊर्जा संसाधनों, परमाणु क्षमता और सैन्य शक्ति के आधार पर रूस ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति में अपना प्रभाव पुनः प्राप्त कर लिया है। यही कारण है कि वह अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अमेरिका के खिलाफ स्पष्टता से अपनी बात कहने लगा है। यह जानते हुए भी कि यूक्रेन पर आक्रमण अमेरिका पर आक्रमण माना जायेगा पर इसके बावजूद उसने न सिर्फ 24 फरवरी 2022 को सैन्य आक्रमण किया वरन् अमेरिका और नाटो देशों के निरंतर विरोध के बावजूद आज अक्टूबर 2026 में भी यह युद्ध जारी है। रूसी राष्ट्रपति ने इसे एक "विशेष सैन्य अभियान" करार दिया था।
5. **यूरोपीय संघ का आर्थिक विकास:** वर्तमान समय में यूरोपीय संघ (म्) वैश्विक मंचों पर शक्तिशाली और प्रभावी रूप से अंतरराष्ट्रीय मामलों पर अपना वक्तव्य देने लगा है, जो अमेरिका प्रभुत्व के लिए स्पष्ट चुनौती है। उसकी विशाल अर्थव्यवस्था, एकल मुद्रा और बाजार ने अमेरिका के व्यापारिक प्रभुत्व के लिए प्रतिद्वंद्विता की स्थिति उपस्थित कर दी है। यूरोपीय संघ की आर्थिक शक्ति, साझा बाजार और कूटनीतिक प्रभाव ने उसे एक महत्वपूर्ण वैश्विक शक्ति-केंद्र बना दिया है। इसके अतिरिक्त यूरोपियन संघ के देश अब भू – राजनीतिक और रणनीतिक दृष्टि से भी अंतर्राष्ट्रीय विषयों पर मुखरता से अपना दृष्टिकोण व्यक्त करने लगे हैं। हाल ही ग्रीनलैंड के मुद्दे पर यूरोपियन संघ ने स्पष्ट रूप से अमेरिका की नीति का विरोध किया और ग्रीनलैंड पर सैन्य कार्यवाही करने का विचार अमेरिका को अंततः त्यागना पड़ा। भारत और यूरोपीयन संघ के मध्य 27 जनवरी 2026 को नई दिल्ली में आयोजित शिखर सम्मेलन के दौरान मुक्त व्यापार समझौता हुआ।
6. **विकासशील राष्ट्रों की उभरती अर्थव्यवस्थाएं:** भारत, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका, इंडोनेशिया और अन्य विकासशील देशों की उभरती अर्थव्यवस्थाओं के बढ़ते प्रभाव ने वैश्विक शक्ति-संरचना को अधिक विविध स्वरूप प्रदान कर दिया है। द्वितीय विश्वयुद्धोत्तर काल में इन देशों ने पश्चिमी देशों से आज़ादी प्राप्त की थी और इनकी स्थितियां जीर्ण शीर्ण ही थी। यहां तक कि वो अन्न उत्पादन की दृष्टि से भी आत्मनिर्भर नहीं थे। 1965 के युद्ध में अमेरिका ने भारत को च् 480 के तहत् अनाज न भेजने की धमकी भी दी थी। इसके बाद भारत में हरित क्रांति हुई और भारत खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर हुआ। इसी भांति अन्य विकासशील देश भी आर्थिक, सैन्य, राजनीतिक और कूटनीतिक दृष्टि से वैश्विक मंचों पर असहाय स्थिति में ही थे पर समय के साथ सभी ने प्रगति की ओर आज अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर उनकी आवाज़ का अपना महत्व है।

7. **वैश्वीकरण का विस्तार:** इंटरनेट की दुनिया ने पूरे विश्व को एक गाँव तुल्य बना दिया है। अर्थात् दुनिया के समस्त देश अब एक दूसरे के बहुत नज़दीक आ गए हैं और मानवाधिकार, लोकतंत्र, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, निवेश और तकनीकी आदान-प्रदान आदि मुद्दों पर विभिन्न देशों की सैन्य, आर्थिक एवं राजनीतिक भूमिकाएं बढ़ गई हैं। अमेरिका जैसी एकल महाशक्ति का दौर अब अतीत का हिस्सा बन चुका है। उदारीकरण और वैश्वीकरण के इस दौर में अमेरिका अब दुनिया पर मनमानी नहीं कर सकता है। अपने द्वितीय कार्यकाल में अमेरिका को अपनी नीतियों में विवश होकर बार बार परिवर्तन करना पड़ा है। चाहे वह ग्रीनलैंड का मामला हो, टैरिफ नीतियां हो और चाहे ईरान – इजरायल युद्ध हो।
8. **क्षेत्रीय संगठनों का महत्व:** ब्रिक्स, आसियान, यूरोपीय संघ और शंघाई सहयोग संगठन जैसे मंचों ने क्षेत्रीय सहयोग तथा वैकल्पिक शक्ति-केंद्रों को प्रोत्साहित किया है। क्षेत्रीय व्यापार समझौतों, सांझा बाजारों और आर्थिक साझेदारियों के जरिए इन सदस्य देशों के बीच न सिर्फ व्यापार और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिला है वरन् सदस्य देशों के आपसी विवादों को शांतिपूर्वक सुलझाने और सीमावर्ती तनाव को कम करने के लिए भी ये संगठन मध्यस्थता का कार्य करते हैं और इस प्रकार आपसी विवादों को सुलझाने के लिए दुनिया के देश अब अमेरिका जैसी वैश्विक महाशक्तियों के मातहत नहीं हैं।
9. **नई तकनीकों का विकास:** अब छोटी और क्षेत्रीय शक्तियां भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर तकनीक, अंतरिक्ष अनुसंधान और डिजिटल अर्थव्यवस्था आदि क्षेत्रों में अपनी क्षमताओं को बखूबी दिखा रही हैं। आज देशों के विकसित होने की कहानी अलग ही दिशा लेने लगी है।

बहुध्रुवीय अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था और ट्रंप प्रशासन

बहुध्रुवीय अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था संबंधी उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि आज राजनीतिक, आर्थिक, सैन्य और तकनीकी शक्ति केंद्र एक या दो वैश्विक महाशक्तियों में निहित नहीं हैं। जब से राष्ट्र राज्यों का निर्माण हुआ है, तभी से विश्व में अधिकांशतः एक या दो शक्ति केंद्र सदैव रहे हैं, जो सम्पूर्ण विश्व में शक्ति संतुलन के कारक होते हैं। किन्तु स्पष्टतः कहा जा सकता है कि विश्व अब अनेक शक्ति-केंद्रों में विभाजित होने लगा है। 21वीं सदी में चीन का बढ़ता प्रभुत्व, रूस की पुनः सक्रियता, भारत, ब्राजील आदि नवस्वतंत्र विकासशील देशों की बढ़ती भूमिका और उभरती नवीन अर्थव्यवस्थाओं के विस्तार ने अमेरिका केंद्रित एकध्रुवीय अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के समक्ष चुनौती उपस्थित कर दी है। जनवरी 2025 में डोनाल्ड ट्रंप के दूसरे राष्ट्रपति कार्यकाल की शुरुआत से लेकर अक्टूबर 2026 के कालखंड के दौरान बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की बहस को और महत्वपूर्ण बना दिया है।

ट्रंप प्रशासन की प्रमुख नीतियाँ और बहुध्रुवीय व्यवस्था पर उनका प्रभाव

1. **“अमेरिका प्रथम” की नीति (America First) को प्राथमिकता—** अमेरिकी प्रशासन का हमेशा से यह दृष्टिकोण रहा है कि राष्ट्रीय हितों से प्रभावित नीतियों का ही संचालन हो, किन्तु इस हेतु अनेक बार विश्व में अपनी प्रभुता स्थापित करने के लिए दुनिया के अनेक हिस्सों में जबरन सैन्य कार्यवाहियों को थोपने का कार्य पहले भी उसने किया है। किन्तु अब ट्रंप प्रशासन “अमेरिका प्रथम” नीति के तहत अपने राष्ट्रीय हितों को सर्वेसर्वा समझने लगा है। इसलिए “अमेरिका फर्स्ट” नीति के तहत आर्थिक सुरक्षा हेतु अपने घरेलू उद्योगों को प्राथमिकता देना आज अमेरिका का प्रमुख उद्देश्य बन गया है। अप्रैल 2016 में, ट्रंप ने पहली बार अपने चुनावी भाषण में इस

शब्द का प्रयोग करते किया था। किंतु अपने द्वितीय कार्यकाल में इसे अपने प्रशासन का प्रमुख आधार बना लिया है। यह नीति अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा अपनाई गई एक ऐसी राष्ट्रवादी और संरक्षणवादी (क्वजमबजपवदपेज) विचारधारा है, जो अमेरिका के अंतरराष्ट्रीय हितों की अपेक्षा राष्ट्रीय हितों को सबसे ऊपर रखती है। इस नीति का उपयोग करते हुए ट्रंप ने भारत सहित दुनिया के देशों को दी जाने वाली शुल्क रियायतों को अब कम करना आरम्भ कर दिया है और ऐसे अंतरराष्ट्रीय संधियों और संगठनों से दूरी बनाना आरम्भ कर दिया है, जिनके कारण अमेरिका पर आर्थिक या सामरिक रूप से अतिरिक्त बोझ पड़ता है। जैसे पेरिस जलवायु समझौता और ट्रान्स-पैसिफिक पार्टनरशिप से हटना। इसके अतिरिक्त अमेरिकी आव्रजन नीति (जैसे २:1 ठट्टा ग्रीन कार्ड) को भी कठोर बना दिया गया है, ताकि अमेरिकी जनता को अधिक रोजगार और आर्थिक सुरक्षा प्राप्त हो।

2. **आर्थिक राष्ट्रवाद एवं टैरिफ वॉर तथा ट्रंप प्रशासन—** ट्रंप प्रशासन ने अमेरिकी उद्योगों के संवर्धन के लिए आयात शुल्क में वृद्धि को प्रमुख साधन बनाया है। अप्रैल 2025 में अमेरिका ने आयात शुल्कों में व्यापक बढ़ोतरी की घोषणा की। अकस्मात उठाए गए इन कदमों से यूरोपीय और एशियाई देशों के साथ अमेरिका के आर्थिक संबंधों में तनाव उत्पन्न हुआ। यद्यपि बाद में सम्बंधित देशों को शुल्क रियायतें अस्थायी रूप से पुनः प्रारंभ कर दी गई किंतु ट्रंप प्रशासन अभी भी व्यापारिक दृष्टि से शुल्कों का अमेरिका के पक्ष में पुनर्निर्धारण करने के प्रति दृढ़ है। इसके परिणामस्वरूप विभिन्न देशों ने अपने व्यापारिक संबंधों में विविधता लाने, नए बाजार खोजने और घरेलू उत्पादन को मजबूत करने पर अधिक ध्यान देना आरम्भ कर दिया है। अमेरिका द्वारा 18: के स्थान पर 50: आयात शुल्क लगाने के पश्चात् भारत ने यूरोपीय संघ के साथ जनवरी 2026 में मुक्त व्यापार समझौता किया, जिसे "मदर ऑफ डील्स" कहा गया। इन सब नवीन अंतराष्ट्रीय परिस्थितियों के कारण विश्व बहुध्रुवीय व्यवस्था की ओर अग्रसर होने लगा है और अमेरिका का दुनिया पर प्रभुत्व आज उतना प्रभावी नहीं रहा है।
3. **नाटो देशों पर ट्रंप प्रशासन की दबाव नीति—** शीतयुद्ध और द्विध्रुवीय व्यवस्था के दौरान नाटो (पूँजीवादी गुट के यूरोपियन देश) देशों की रक्षा की जिम्मेदारी पूरी तरह अमेरिका की ही थी। एकध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था में भी अमेरिका ने इस जिम्मेदारी को समझा था, किंतु ट्रंप प्रशासन और विशेषकर अपने द्वितीय कार्यकाल में ट्रंप ने "अमेरिका प्रथम नीति" को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है और अमेरिका ने अपने यूरोपीय सहयोगियों (मुख्यतः नाटो देश) से अपनी अपनी रक्षा पर अधिक खर्च करने तथा सामूहिक सुरक्षा में अधिक आर्थिक जिम्मेदारी निभाने की माँग आरम्भ की है। ट्रम्प प्रशासन का तर्क है कि अब अमेरिका अपने नाटो एवं अन्य वैश्विक सहयोगियों की सुरक्षा पर असामान्य रूप से आर्थिक भार नहीं उठाएगा।
4. **चीन के साथ रणनीतिक एवं व्यापारिक प्रतिस्पर्धा और ट्रंप प्रशासन—** पिछले दशक में चीन का जिस प्रकार सैन्य, तकनीकी, व्यापारिक, रणनीतिक और राजनीतिक दृष्टि से उत्थान हुआ है, वह अभूतपूर्व है। चीन एक ऐसा देश है, जो आज अमेरिका के लिए आर्थिक, तकनीकी और सामरिक प्रतिस्पर्धा का प्रमुख केंद्र बना हुआ है। 2025 में अमेरिकी प्रशासन ने चीन के साथ व्यापारिक संबंधों की समीक्षा की और चीन के साथ संबंधों को "उमतपबं थपतेज" व्यापार नीति में स्पष्ट रूप से सम्मिलित किया और चीन को उसमें विशेष वरीयता दी। यही कारण है कि भारत सहित दुनिया के अनेक देशों पर ट्रंप ने आयात शुल्क में वृद्धि की, किंतु चीन के साथ वह शुल्क

व्यवस्था में परिवर्तन नहीं कर सका। यद्यपि दोनों देशों के बीच व्यापार, उन्नत प्रौद्योगिकी, सेमीकंडक्टर, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में प्रभाव को लेकर प्रतिस्पर्धा है, किन्तु चीन को बराबरी के धरातल पर रखकर ट्रंप प्रशासन द्वारा नीतियां निर्मित की जा रही हैं। स्पष्ट हैं, वर्तमान में विश्व बहुध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था की ओर ही विकासमान हैं।

5. **रूस – यूक्रेन युद्ध और यूरोपीय देशों (विशेषकर नाटो समूह) की समस्याओं पर ट्रंप नीति** – रूस– यूक्रेन युद्ध (24 फरवरी 2022) 21वीं सदी की वह महत्वपूर्ण घटना हैं, जिसने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को अमेरिका के प्रभाव क्षेत्र से निकालकर विश्व को बहुध्रुवीयता की दिशा में अग्रसर कर दिया हैं। इस युद्ध ने रूस की सामरिक शक्ति को पुनर्जीवित कर दिया हैं। अमेरिका और नाटो देशों के विरोध की परवाह न करते हुए रूस ने नाटो देशों के ग्रुप में सम्मिलित होने से यूक्रेन को रोकने हेतु उसके खिलाफ युद्ध छेड़ दिया। यद्यपि अमेरिका ने विभिन्न पक्षों के साथ बातचीत करने और अपने कूटनीतिक प्रभाव का उपयोग शांति स्थापना हेतु किया है, किन्तु अभी तक असफलता ही प्राप्त हुई क्योंकि रूस और यूक्रेन दोनों देशों ने उसके शांति प्रस्तावों को ठुकरा दिया हैं। यह स्थिति दर्शाती है कि नाटो और यूरोपीय सुरक्षा की दृष्टि से अमेरिका आज समर्थ स्थिति में नहीं हैं।
6. **ईरान-अमेरिका युद्ध और ट्रंप नीति** – ईरान और अमेरिका के बीच युद्ध का प्रभाव केवल पश्चिम एशिया तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वैश्विक शक्ति-संतुलन को भी प्रभावित कर रहा है। अब यह पूर्णतः स्पष्ट होने लगा हैं कि अनेक क्षेत्रीय महाशक्तियों को अमेरिकी वर्चस्व स्वीकार्य नहीं हैं। फरवरी 2026 में अमेरिका ने इजरायल के पक्ष में ईरान पर आक्रमण कर दिया, जो अक्टूबर 2026 में भी जारी हैं। दोनों के मध्य लंबे संघर्ष से अमेरिकी सैन्य एवं आर्थिक शक्ति पर दबाव बढ़ता जा रहा हैं और उसकी वैश्विक नेतृत्व क्षमता पर भी प्रश्न उठने लगे हैं। इस प्रकार यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि अमेरिका को वैश्विक स्तर पर न सिर्फ चुनौतियां दी जाने लगी हैं, वरन एकमात्र महाशक्ति का उसका दर्जा भी अब कमजोर पड़ने लगा हैं। ईरान-अमेरिका संघर्ष एक प्रकार से बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की प्रवृत्ति का भी संकेतक हैं। इस युद्ध ने चीन, रूस और क्षेत्रीय शक्तियों की भूमिका को भी महत्वपूर्ण बना दिया है।
7. **ग्रीनलैंड पर अमेरिकी नियंत्रण की ट्रंप नीति** – ग्रीनलैंड उत्तरी अटलांटिक और आर्कटिक क्षेत्र में स्थित एक स्वशासित क्षेत्र हैं, जो डेनमार्क के अंतर्गत आता हैं। ट्रंप का ग्रीनलैंड पर नियंत्रण का प्रयास 2019 में आरम्भ हुआ और 2025-26 में ट्रंप प्रशासन ने सैन्य और आर्थिक दबाव की नीति अपनाई और कहा कि ग्रीनलैंड पर अमेरिकी नियंत्रण उसकी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए आवश्यक हैं। किंतु ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, स्वीडन, नार्वे, फिनलैंड आदि यूरोपीय संघ के अधिकांश राष्ट्रीय नेताओं ने अमेरिकी दबाव का खुलकर विरोध किया और आर्कटिक सुरक्षा पर पारस्परिक सहयोग देने पर जोर दिया। इस प्रकार यूरोपीय नेताओं ने अमेरिकी धमकी का एकजूट होकर विरोध किया और डेनमार्क के समर्थन में आवाज़ उठाई। अंततः 21 जनवरी 2026 को ट्रंप प्रशासन ने सैन्य बल प्रयोग से पीछे हटने और यूरोपीय देशों पर प्रस्तावित टैरिफ लगाने की प्रक्रिया को रोक दिया। ग्रीनलैंड विवाद ने भी बहुध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था की ओर ही इंगित करने का कार्य किया हैं

8. **ब्रिक्स (ठट्ठै) समूह और ट्रंप प्रशासन—** ब्रिक्स का विस्तार अमेरिका—केंद्रित विश्व व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण राजनीतिक और आर्थिक चुनौती हैं। ठट्ठै के सदस्य देशों में चीन, रूस, भारत, ब्राजील जैसी बड़ी शक्तियाँ शामिल हैं। जनवरी 2024 में इस समूह का विस्तार किया गया और मिश्र, इथोपिया, ईरान, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात आदि देशों को भी सम्मिलित किया गया। आज इस समूह की सदस्य संख्या कुल 11 हैं। इन सभी देशों का प्रमुख उद्देश्य डॉलर और अमेरिकी सहायता पर निर्भरता कम करना और समूह के देशों के मध्य व्यापारिक एवं रणनीतिक समझ को विकसित करना हैं। इस हेतु संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद आदि वैश्विक संस्थाओं में सुधारों पर भी ब्रिक्स देशों के सम्मेलनों में वैचारिक मंथन किए जाते हैं। ट्रंप प्रशासन ने ठट्ठै की संभावित वैकल्पिक वित्तीय भूमिका को गंभीरता से लिया है। इस प्रकार ठट्ठै और अमेरिका के बीच आर्थिक प्रतिस्पर्धा भी वैश्विक व्यवस्था के बहुध्रुवीय स्वरूप की दिशा में एक महत्वपूर्ण घटक हैं।
9. **भारत— अमेरिका संबंध और बहुध्रुवीय व्यवस्था में भारत की भूमिका—** भारत के लिए बहुध्रुवीयता का अर्थ केवल अमेरिका के प्रभाव को कम करना नहीं, बल्कि ऐसी अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था का विकास करना है जिसमें भारत स्वतंत्र रूप से निर्णय ले सके और वैश्विक निर्णय—प्रक्रिया में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके और इस हेतु भारतीय विदेश नीति प्रयासरत हैं। बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत की भूमिका विशेष महत्व रखती हैं क्योंकि उसके अमेरिका, रूस, यूरोपीय संघ, जापान, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका और पश्चिम एशिया के लगभग देशों के साथ विशिष्ट प्रकार के रणनीतिक संबंध हैं। भारत ब्रिक्स, आशियान, क्वाड, जी 4 और अन्य ग्लोबल मंचों का भी सदस्य है। भारत की नीति हमेशा से ही अंतराष्ट्रीय शांति, सहअस्तित्व और आपसी विवादों का मध्यस्थता से निपटारा करने की रही हैं। फरवरी 2025 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति ट्रंप ने भारत—अमेरिका ब्युत्तममदेपअम ठसवइंसैजतंजमहपब त्तजदमतौपच को आगे बढ़ाने तथा रक्षा, व्यापार और प्रौद्योगिकी में सहयोग बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की। हालांकि अमेरिका ने भारतीय वस्तुओं के आयात पर 2025 में 50: किये गये आयात शुल्क पुनः 18: कर दिये गये हैं। किंतु भारतीय कृषि उत्पादों पर टैरिफ तथा रूस से भारतीय तेल खरीद जैसे मुद्दों पर मतभेद आज भी जारी है। भारत की स्थिति यह दर्शाती है कि उसकी दृष्टि में बहुध्रुवीयता का अर्थ अनिवार्य रूप से अमेरिका—विरोध नहीं है। कोई देश एक से अधिक शक्ति—केंद्रों के साथ समानांतर संबंध रख सकता है। इस दृष्टि से भारत की बहुध्रुवीयता के प्रति नीति वैश्विक शांति और स्थिरता में साधक और अति महत्वपूर्ण हैं।

निष्कर्ष

उपर्युक्त शोध पत्र के तथ्यात्मक विश्लेषण से निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि वर्तमान अंतराष्ट्रीय व्यवस्था संक्रमणकाल से गुजर रही हैं। शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद अमेरिका का विश्व पर निर्विवाद वर्चस्व स्थापित हो गया था। अर्थात् वह विश्व की एकमात्र महाशक्ति के रूप में उसे वैश्विक मान्यता प्राप्त हो गई थी। किंतु 21वीं और विशेषकर पिछले दशक में चीन के आर्थिक एवं सामरिक उत्थान और रूस के अंतराष्ट्रीय मामलों में पुनः सक्रिय होने के बाद अमेरिका का एकमात्र महाशक्ति का दर्जा संकट में पड़ता नज़र आने लगा है। साथ ही योरोपीय संघ के देशों और भारत, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका आदि विकासशील देशों के व्यापारिक और सामरिक क्षेत्रों में विकास के सोपान तय करने के परिणामस्वरूप ये देश आत्मनिर्भर होकर स्वतंत्र निर्णय लेने लगे हैं। यहां तक कि ईरान जैसे देश अमेरिका

और ट्रंप प्रशासन को खुली चुनौती देने का कार्य भी करने लगे हैं। उक्त स्थितियां विश्व के बहुध्रुवीय व्यवस्था की ओर जाने की ओर ही इंगित कर रही हैं। रूस –यूक्रेन युद्ध, ईरान – अमेरिका संघर्ष और ग्रीनलैंड विवाद जैसी वैश्विक घटनाएं यह स्पष्ट करती हैं कि वर्तमान विश्व राजनीति यद्यपि आज भी अमेरिका केंद्रित हैं किंतु चीन और रूस जैसी महाशक्तियों के अतिरिक्त अब यूरोपीय संघ, भारत, ब्राजील, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका तथा अन्य उभरती शक्तियों का महत्व भी दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। वैसे भी आज सैन्य शक्ति के साथ साथ व्यापार, ऊर्जा सुरक्षा, कूटनीति, आर्थिक दबाव और क्षेत्रीय सहयोग की नीति भी शक्ति प्रतिस्पर्धा के महत्वपूर्ण साधन बन गए हैं। यद्यपि अभी भी अमेरिका का इन समस्त क्षेत्रों में प्रभुत्व है पर अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच पर अनेक शक्ति केंद्र स्थापित होने लगे हैं, जो समय समय पर अमेरिका को चुनौती देने की स्थिति में हैं।

इस प्रकार 1991 में सोवियत संघ के विघटन के पश्चात् स्थापित अमेरिकी महाशक्ति केंद्रित एकध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था अब बहुध्रुवीयता की ओर अग्रसर हैं। इस परिवर्तन में डोनाल्ड ट्रंप का दूसरा प्रशासन एक महत्वपूर्ण कारक है, लेकिन ट्रंप प्रशासन की नीतियों को ही बहुध्रुवीयता की ओर बढ़ने का एकमात्र कारण नहीं माना जा सकता, बल्कि यह दीर्घकालिक और संरचनात्मक वैश्विक परिवर्तनों का परिणाम है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. The White House. (2025). National Security Strategy. व्हाइट हाउस की आधिकारिक वेबसाइट.
2. भारत की विदेश नीति, भारत-अमेरिका संबंध तथा बहुपक्षीय सहयोग संबंधी आधिकारिक दस्तावेज। विदेश मंत्रालय की वेबसाइट
3. Brookings Institution. (2026). "Is Trump Reshaping the World Order?" Analytical Article.
4. Waltz, Kenneth N. (1979). Theory of International Politics. Addison-Wesley.
5. Mearsheimer, John J. (2001). The Tragedy of Great Power Politics. W. W. Norton & Company.
6. Huntington, Samuel P. (1996). The Clash of Civilizations and the Remaking of World Order. Simon & Schuster.
7. United Nations. (1945 से वर्तमान तक). United Nations Charter तथा महासभा एवं सुरक्षा परिषद के अभिलेख एवं संयुक्त राष्ट्र चार्टर.
8. World Trade Organization. अंतरराष्ट्रीय व्यापार, संरक्षणवाद और टैरिफ संबंधी रिपोर्ट एवं आँकड़े। विश्व व्यापार संगठन.
9. Chatham House. (2025). Competing Visions of International Order: Responses to US Power in a Fracturing World. Research Report.
10. Carnegie Endowment for International Peace. (2026). "Retreat, Rebel, Replace, or Reform? Making Sense of Multilateralism Under Trump 2.0." Research Report.
11. Acharya, Amitav. (2018). The End of American World Order (2nd ed.). Polity Press.

